International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1076-1077

अवधी काव्य–स्वतंत्रता आन्दोलन के सन्दर्भ में

डॉ0 अजय कुमार शुक्ल
ग्राम–मरवट, पो0भदावल, जिला–बस्ती, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

'अवधी' हिन्दी भाषा में परिगणित होने वाली वह क्षेत्रीय बोली है जो अवध प्रान्त में दैनिक सम्प्रेषण का माध्यम है और अपने साहित्यिक उन्नयन के कारण मध्यकाल से ही प्रमुख साहित्यिक भाषा मानी जाती है। अवधी साहित्य में राष्ट्र परक गीतों की रचना का पुरजोर प्रमाण मिलता है। कजरी गारी आल्हा आदि की लोकधुनों पर आधारित ऐसे गीत जनमानस में 'प्रयाण' की भावना को मजबूती प्रदान करते हैं। वंशीधर शुक्ल, चन्द्र भूषण त्रिवेदी 'रमईकामा', आद्या प्रसाद 'उन्मत्त', बलभद्र प्रसाद दीक्षित 'पढ़ीश' जी प्रभृति अनेकानेक रचनाकारों ने अवधी की ओजस्विता का पुट अपने काव्य–गीतों को प्रदान किया है।

चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमईकामा' जन–जन को अर्जुन की भूमिका में रखकर उसे वीर लक्ष्य की प्राप्ति के निमित्त उत्साहित करते हुए मानों स्वयं कृष्ण की भाँति गीता का उपदेश दे रहे हैं –

''उठो उठो पार्थ गहो हाथ धनुष बान
कुल कलंक न लगाव
क्षत्री होय भय न खाव
हिये भरौ वीर भाव
सखा करों जुद्ध अनुष्ठान
उठो उठो पार्थ गहो हाथ धनुष बान।।[1]

कवि ने क्षात्र धर्म का उद्दीपन करते हुए युद्ध को एक पवित्र अनुष्ठान माना है। कवि संस्कृति और प्रकृति की एकतानता का सन्दर्भ लेते हुए पर्वतराज हिमालय के माध्यम से देशवासियों को जागरण का सन्देश दिया है। कविता दृष्टव्य है–

''जागौ हे परबत राज लखौ है,
जगमगात सिर पर विहान
तुम सोय रहे हिमगिरि बाबा
बदरा कै चदरा तान तान।''[2]

अवधी काव्य के एक प्रमुख हस्ताक्षर वंशीधर शुक्ल जी हैं। अवधी में उन्होंने अनेक राष्ट्रीय कविताओं की रचना की है। उनके द्वारा रचित एक पंक्ति यहाँ दृष्टव्य है जो स्वतंत्रता आन्दोलन के दौरान प्रत्येक महिला–पुरूष के मुँह से बरबस सुनी जा सकती थी–

''मोरे चरखे का टूटे न तार
चरखवा चालू रहे।''[3]

यहाँ 'चरखा' स्वाधीनता आन्दोलन का प्रतीक हैं, जिसके अनवरत चलते रहने तथा उसके तार (जुड़ाव क्रम) के न टूटने की कामना की गयी है। यह रचना 'गारी' की प्रचलित लोकधुन पर आधारित है।

देश की आजादी में लोकगीतों ने महती भूमिका का निर्वहन किया। गाँव–गाँव से आजादी की पुकार सुनायी दे रही थी। इस पुकार को सार्थक करने के लिए आवश्यकता थी वीरों के जोश–खरोश से आगे बढ़ जाने की। कौड़ा और चौपाल पर आजादी के तराने गाये जाते थे। लोकगीत की प्रत्येक विधा में सेवा त्याग बलिदान संघर्ष की कहानी कही जाती थी। पूर्वांचल में उस समय सबसे महत्वपूर्ण विधा 'कजरी' थी, जिसका केन्द्र मीरजापुर, बनारस, बाँदा तक था। भारतेन्दु और प्रेमधन का सम्बन्ध मीरजापुर से था। उन्होंने तथा रामनरेश त्रिपाठी व अम्बिका दत्त व्यास ने लोगों को राष्ट्रीय विषयों पर कज़री लिखने की प्रेरणा दी। फलतः अवधी में देश–प्रेम स्वतंत्रता, बलिदान, संघर्ष एकता एवं अखण्डता जैसे विषयों पर राष्ट्रीय कविताओं का विपुल भण्डार सृजित हो गया–

''हरि हरि वीर जवाहर भारत के मरदाना रे हरी
हरि हरि बापू के मान उपदेश, चले सेनानी रे हरी।।''[4]

भारत की स्वाधीनता के लिए जूझ रहे भारतीयों पर जलियांवाला बाग में जो निर्मम प्रहार हुआ, उससे समूचा भारत सिहर उठा। इस घटना पर रचित एक प्रयाणगीत की मार्मिकता अनुभव करने योग्य है–

सर बाँधे कफनवा हो
शहीदों की टोली निकली
जुल्मी डायर के फायर ते
भूमि होइ गयी लाल
जलियांवाला बाग में देखो
जूझे मदन गोपाल
कलेजे बीच गोली निकली।
सर बाँधे कफनवा हो
शहीदों की टोली निकली।[5]

पं0 वंशीधर शुक्ल की चर्चित कविता 'सत्याग्रही' तत्कालीन स्वाधीनता सेनानियों के कण्ठ का हार बनी हुई थी। जिसे प्रायः प्रभात फेरियों में गाया जाता था–

''उठ जाग मुसाफिर भोर भई
अब रैन कहाँ जो सोवत है
जो जागत है सो पावत है
जो सोवत है सो खोवत है।''6

गाँधी जी के आह्वान पर देश के जवानों को स्वाधीनता संग्राम में कूद पड़ने के लिए प्रेरित करते हुए श्यामलाल शुक्ल 'चकोर' ने अपने भावों को निम्नलिखित ढंग से व्यक्त किया है–

''टेरति बूढ़ गँधेवा चलउ जवान
दौरउ देसु बचावउ जो कछु आन।
पुतवा करउ जननि का बन्धन हीन
तड़पि रही वह जइसे जल बिनु मीन।।''7

गाँधी जी ने ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा करके जब नमक कानून तोड़ा तो समकालीन अवधी कवियों ने उसके समर्थन में जो काव्याभिव्यक्ति की उससे प्रभावित होकर जनता ने नमक कानून की धज्जियाँ उड़ाने में भरपूर सहयोग दिया–

''यह कानून पताल पठइबा
गली गली मां आग लगइबा
अब अनीति न तनिकउ सहिबा
हम स्वतंत्र होइ पूरे रहिबा
सत्याग्रह का अस्त्र उठइबा
भइया हम तो नमक बनइबा।।''8

उ0प्र0 में 1937 में रफी अहमद किदवई के नेतृत्व में टेनेन्सी बिल पास करके किसानों को नोरूसी हक दिया गया। भू–स्वामित्व और लगान की स्थायी जमाबन्दी की व्यवस्था ने किसानों में उत्साह का संचार कर दिया।

''किदवई क्यार सम्मान करौ
डटिकै अब ग्राम सुधार करौ
टेनेन्सी बिल हो पास गया
जो चहिन किदवई सोइ भवा।।''9

1941 के भारत छोड़ो आन्दोलन का प्रभाव पूरे देश पर पड़ा। आन्दोलन को ऊर्जावान बनाये रखने के लिए अवधी कवियों ने बहुत सी रचनाएं की। आन्दोलनकारियों की हुंकार और जयनिनाद इन्हें प्रयाणगीतों के समकक्ष स्थापित करती है। ऐसा ही एक गीत दृष्टव्य है–

''गाँधी कै आँधी हहरान
मानऊ काल घटा घहरान
वे फिरि किहिन मुक्ति कर नाद
जेहिते होइ देसु आजाद
अंगरेजउ अब छोड़उ देसु
बहुतै होइगै गाढ़ कलेसु।।''10

पूरे देश में ''भारत छोड़ो'' शंख ध्वनि फैल गयी। अवध क्षेत्र ने इसमें बढ़ चढ़कर हिस्सेदारी की। जनता में यह भावना व्याप्त हो गयी कि यह स्वतंत्रता संग्राम का अन्तिम काण्ड है। अतः अब पीछे नहीं हटना है।

''अब पाछे पाँव हटइबा ना
गाँधी जी की जय बोलि चुकेन
अब पाछे पाँव हटइबा ना
हम मूढ़ कटइबा मुरचे पर
मुलु दबि कै नाक कटइबा ना
अब पाछे पाँव हटइबा ना।।''11

स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रत्येक व्यक्ति की भागीदारी निश्चित करते हुए लोक कवियों ने समस्त देशवासियों का इस आन्दोलन में आह्वान किया है। इस पुनीत कार्य में अलौकिक शक्तियों को भी सहयोग देने के लिए आहूत किया है।

''काली जागौ खप्पर लइकै, लइ गदा उठौ हे हनुमान
हे कृष्ण संभारौ पाँचजन्य हे पार्थ उठौ लै धनुषबान
आपन तीसर नयन उधारौ हे भोला शिवशंकर जागौ
आपन तिरसूल संभारे तुम प्रलयंकर अभयंकर जागौ
घर–घर की दुर्गा जागि परौ हे लक्ष्मी बाई जागि परौ
भारत के भामा शाह उठौ घर–घर के भाई जागि परौ।।''12

देश की स्वतंत्रता के लिए चलाये गये आन्दोलनों को गति और दिशा देने में अवधी काव्य और कवियों का विशेष महत्व रहा है। राष्ट्रीय और सामाजिक आन्दोलनों की पृष्ठभूमि पर सृजित अवधी कविताओं की विपुल राशि देखकर यह कहने की बलवती इच्छा होती है कि ऐसे राष्ट्रपरक गीत स्वयं में अनुसंधान का विषय है।

सन्दर्भ सूची

1. भै भिनुसार–चन्द्रभूषण त्रिवेदी 'रमई काका'–पृ0 41
2. वही पृ0 12
3. वंशीधर शुक्ल–परम्परा–प्रसिद्ध गीत
4. अवधी की राष्ट्रीय कविताएँ –सं0 डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप'
5. ज्ञान शिखा–2, प्र0ल0वि0वि0 पृ0 44
6. अवधी की राष्ट्रीय कविताएं–सं0 डॉ0 श्याम सुन्दर मिश्र 'मधुप'
7. वही
8. 8. वही – पृ0 8
9. वही –पृ0 11
10. वही – पृ0 15
11. वही –पृ0 18
12. वही –पृ0 162–63